सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ग्रामीण महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में

बीज शब्द : *आईसीटी, सूचना, संचार, प्रौद्योगिकी, महिला, सशक्तीकरण, ग्रामीण, जागरूकता, एमडीजी, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, पाठयक्रम, वायरलेस तकनीक, डब्ल्यूएसआईएस*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

वर्तमान प्रौद्योगिकी युग के तमाम आविष्कारों में सूचना एवम् संचार प्रौद्योगिकी एक क्रांतिकारी कदम हैं, जो दुनिया की तस्वीर को बदलने में अपनी अहम् भूमिका निभा रहीं है। आज इसने गाँव और कस्बों में ही नहीं बल्कि देश और दुनिया में अपनी जड़े फैलाने व दूरियों को पाटने में सक्षम रही है। प्रौद्योगिकी की जो नींव पहिये के नवाचार से पडी थी, वह आज सूचना व संचार क्रान्ति के तत्कालिन युग की परिवर्तित व सशक्ता की प्रखर धारा के रूप में उजागर हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी में भी महिलाओं की समान भूमिका के बिना स्त्री सशक्तिकरण की संकल्पना अधूरी है। महिलाओं को हर तरह की विषम परिस्थितियों से लड़ने, सुख-सुविधाएं मुहैया कराने और एक महिला सशक्त समाज के निर्माण में आईसीटी की भूमिका अपना निर्वहन कैसे कर रही है, यह शोधपत्र जो सूचना एवम् संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा ग्रामीण महिलाओं में आये सशक्तीकरण को दर्शाता है।

चंचल रानी
रिसर्च स्कॉलर, समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
(राज.)-334001
E-mail ID: chanchalsgnr83@gmail.com

सूचना एवम् संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) शब्द अंग्रेजी भाषा के 'तीन' शब्दों का संगठित स्वरूप है। 'I' = Information, + 'C' = Communication+ 'T' = Technology जिसमें 'Information' शब्द (सूचना या जानकारी, ज्ञान, खबर) आदि से है। 'Communication' (संचार या सम्प्रेषण) व 'Technology' शब्द (तकनीकी) अर्थात् सूचना या जानकारी को सम्प्रेषित करने वाले उन तकनीकी साधनों से हैं जो आज गांव, कस्बे, नगर, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी न किसी रूप में सूचनाओं को पहुंचाने में सहायक है और जिससे एक व्यक्ति घर बैठे अपने आसपास के वातावरण व देश, विदेश में घटित होने वाली विविध प्रकार की घटनाओं, परिवर्तन, प्रक्रियाओं आदि से अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क में रहता हैं।

''आईसीटी मूल रूप से सूचना संचालन करने वाला वह उपकरण है जो- माल, अनुप्रयोगों और सेवाओं के विभिन्न सेट जो सूचना के उत्पादन, भण्डारण प्रक्रिया, वितरण, विनिमय के लिए उपयोग किये गये है। इसमें रेडियो, टेलीविजन और टेलीफोन के 'पुराने' आईसीटी और कम्प्यूटर, उपग्रहण, वायरलेस तकनीक के 'नए' आईसीटी और इंटरनेट शामिल है'' (यूएनडीपी)। आईसीटी वाक्यांश सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल 1980 से शैक्षणिक शोधकर्ताओं द्वारा किया गया जो 1997 में डेनिस स्टीवेन्सन द्वारा यूके सरकार की एक रिपोर्ट में आईसीटी शब्दावली का प्रयोग किए जाने के बाद लोकप्रिय हुआ और इंग्लैंड, वेल्स और उत्तरी के संशोधित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में 2000 में आयरलैंड में शामिल किया गया। 21 दिसम्बर 2001 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव 56/183 को मंजूरी दी : इस प्रस्ताव के अनुसार, महासभा ने मिलेनियम डेवलपमेंट लक्ष्यों (एमडीजी) को प्राप्त करने के लिए इसे आईसीटी से जोड़ा गया जो कि अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं से निपटने के साथ महिला सशक्तीकरण की दिशा में कार्य करती है। इस प्रकार महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने हेतु वैश्विक स्तर पर अथक प्रयास जारी हैं। 1980 के दशक के उपरान्त आईसीटी, जो कि बहुत ही तेजी से परिवर्तित प्रक्रिया के रूप में उभरकर सामने आयी है। इन सब प्रयासों के चलते सशक्तीकरण की पहल 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, नैरोबी में की गई। जब हम महिला सशक्तीकरण की बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य केवल पुरुषों की बराबरी करना न होकर महिलाओं को वे सारे उपकरण उपलब्ध करवाना है जिनकी सहायता से 'आधी दुनिया' उन्नति कर सकती है।

जिनेवा 2003 के विश्व सम्मेलन में आईसीटी को महिला सशक्तीकरण के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा गया

है (डब्ल्यूएसआईएस)।

महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता :

सदियों से महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, शोषण, दासत्व युग से बाहर एक स्वच्छंद वातावरण में उनको जीवन जीने का अवसर प्रदान करने व पुरुषों के समानाधिकार दिए जाने ताकि वे कंधे से कंधा मिलाकर चल सके लेकिन हमारे देश की आबादी का आधा हिस्सा आज भी पुरुष प्रधान समाज की परम्परागत पितृसतात्मक व्यवस्था के अधीनस्थ अपना जीवन व्यतीत कर रही है, फिर चाहे वह पिता, भाई, पति, बेटा किसी भी रूप में क्यों न हो उसकी जीवन-यात्रा इसी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में विलुप्त हो रही हैं। इन्ही सब व्यापक परिस्थितियों ने महिला सशक्तीकरण की आवाज को बुलंद किया है। अगर देश का विकास करना है, तो देश की महिलाओं को विकास की मुख्य धारा से जोड़ना अत्यन्त आवश्यक है तभी भारत देश को विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खडें करने के सपने को साकार किया जा सकता हैं। अत: महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता को स्वामी विवेकानंद द्वारा उद्धृत उक्ति द्वारा समझा जा सकता है,- ''यदि राष्ट्र को समृद्ध-सम्पन्न होना है, विश्व गुरू बनना है तो उसमें स्त्री की सहभागिता आवश्यक है।''

सशक्तीकरण में आईसीटी की भूमिका :

आईसीटी उन हर एक दुर्गम स्थानों में पहुंचने व प्रकाशमान करने की क्षमता रखती है जहां शायद किसी और तकनीकी की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं के सारे अथक प्रयास उधर विफल हो जाते है जहाँ मानव मात्र में जागरूकता की कमी हो। फिर चाहे समाज के विकास की किसी भी धारा से उन्हे जोड़ने का प्रयास क्यों न किया जाए सब विफल है, जब तक उनमें जागरूकता पैदा नहीं की जाये और यहां जब हम बात करते है महिलाओं की, उनके विकास की, तो सबसे पहले व्यक्तिगत स्तर पर उनमें जागरूकता पैदा करने की नितान्त आवश्यकता है और यह कार्य आईसीटी के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है।

साहित्य पुनरावलोकन :

हीक्स, आर. (1999) ''इन्फोर्मेशन एण्ड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी : पॉवर्टी एण्ड डवलपमेन्ट'' - ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का गरीबी पर पडने वाले प्रभाव व परिणामस्वरूप समाज में विकास की दिशा को दृष्टिगोचर किया है।

मित्तर, एस. (2003) ''पार्ट-III - ग्लोबलाइजेशन एण्ड आईसीटी : इम्प्लॉयमेन्ट अपॉर्चुनिटीइज फोर वूमेन'' - वैश्वीकरण, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप महिलाओं के लिए रोजगार के जो अवसर खुलकर सामने आये है, उन विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डाला है।

पिल्लई और शान्ता (2008) ''आईसीटी एण्ड एम्पावरमेंट प्रोमोशन अमंग पूअर वूमेन : हाव केन वी मेक इट हैप्पन ? सम रिफ्लेक्शन ऑन केरलाज एम्सपीरियन्स'' - सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप गरीब महिलाओं में रोजगार को कैसे प्रोत्साहन मिला है, इसे 'केरला' के कुछ अनुभवों से परिलक्षित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. **वृहद् उद्देश्य -**

''सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का ग्रामीण महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में'' विश्लेषण करना।

2. **सूक्ष्म उद्देश्य -**

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक ग्रामीण महिलाओं की पहुँच का अध्ययन करना।
- ग्रामीण महिलाओं में आईसीटी के फलस्वरूप निर्णय लेने की क्षमताओं को जानना।
- महिलाओं में आईसीटी के फलस्वरूप जागरूकता, आत्मविश्वास व वैयक्तिक पक्षों को जानना।
- महिलाओं की आर्थिक सबलता में आईसीटी के योगदान को जानना।

अध्ययन की उपकल्पना :

- आईसीटी के फलस्वरूप ग्रामीण महिलाओं में ज्ञान का स्तर बढ़ा है।
- आईसीटी के फलस्वरूप महिलाओं में अपराधों के प्रति चेतना बढ़ी है।
- शिक्षित व कार्यशील महिलाएं, अशिक्षित व घरेलू महिलाओं की तुलना में आईसीटी से अधिक प्रभावित होती है।

अध्ययन प्रविधि :

अध्ययन क्षेत्र व विषय वस्तु -

प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के श्रीगंगानगर जिले की 'ग्राम पंचायत 12 एच' के अन्तर्गत 15-75 वर्ष की विभिन्न वर्गो की ग्रामीण महिलाओं व बालिकाओं का उत्तरदाता के रूप में चयन किया गया है।

निदर्शन -

अध्ययन में 'वर्ग बद्ध दैव निदर्शन' को उपर्युक्त मानते हुए समग्र गुणों के आधार पर समग्र को कुछ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए

श्रीगंगानगर जिले की 200 ग्रामीण महिलाओं का प्रतिनिधि के रूप में चयन किया गया है।

प्रकृति –

प्रस्तुत शोध की प्रकृति अन्वेषणात्मक है।

तथ्य संकलन के स्रोत – तथ्य संकलन की प्रविधियों को 'दो' भागों में बांटा गया है –

प्राथमिक स्रोत : प्रस्तुत शोध से सम्बंधित तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक स्त्रोतों में अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची के प्रयोग के साथ अध्ययन में प्रयुक्त 'साक्षात्कार अनुसुची' में विभिन्न प्रकार के खुले, बंद संयोजित, दोहरे निर्देशक, श्रेणीबद्ध प्रकृति के प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।

द्वितीयक स्त्रोत : इसके अन्तर्गत डायरी, पत्र, जीवन-इतिहास, अध्ययन सम्बंधित लेख, समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, सरकारी प्रतिवेदन, इन्टरनेट आदि को सम्मलित किया गया है।

तथ्य संकलन :

प्रस्तुत शोध हेतु चयनित क्षेत्र से सम्बंधित 200 'साक्षात्कार अनुसूची' तैयार की गयी। जिसमें विभिन्न प्रकृति के बहुवैकल्पित प्रश्नों को अवलोकन व साक्षात्कार प्रणाली द्वारा उत्तरदाता से प्रत्यक्ष सम्बंध स्थापित करते हुए भरवाई गयी। इस प्रकार अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित सूचना का संकलन करते हुए वास्तविक तथ्यों के समावेश का प्रयास किया गया है।

वर्गीकरण, सारणीय एवं विश्लेषण :

1. 'दूरसंचार सेवाओं (मोबाइल)' के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	दूरसंचार (मोबाइल)	हाँ	200	100
ब.	संबंधी जानकारी	नहीं	–	–
	योग		200	100

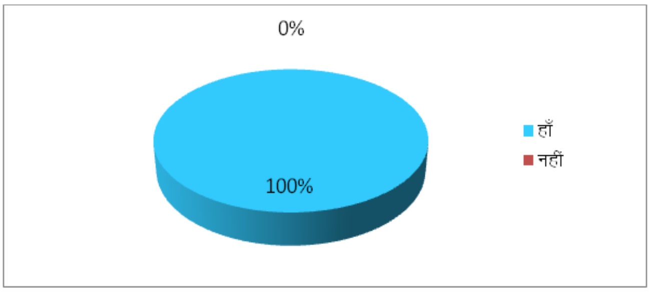

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मोबाइल दूरसंचार तकनीकी का उपयोग करने वालों में शत-प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं आज इस तकनीकी के सम्पर्क में है और आवश्यकता पड़ने पर किसी न किसी रूप में इसका उपयोग कर रही है, इसमें वे सभी उत्तरदायी शामिल है जिनके दैनिक दिनचर्या या यदा कदा का उपयोग शामिल है, निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि आज ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं भी इस तकनीकी के उपयोग से अछूती नहीं है व मोबाइल तकनीकी उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है।

2. 'इंटरनेट' के उपयोग के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	इंटरनेट उपयोग	हाँ	109	54.5
ब.	संबंधी	नहीं	91	45.5
	योग		200	100

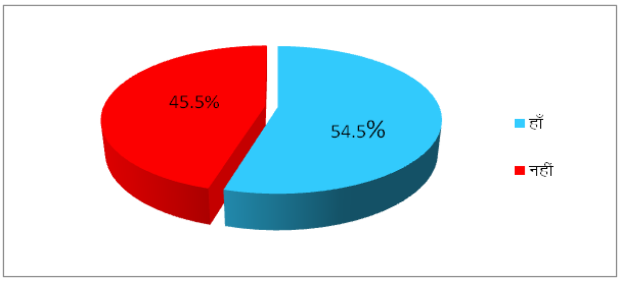

उपरोक्त सारणी में इंटरनेट का उपयोग करने वाली उत्तरदात्रियों के रूप में 54.5 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं है, जिनमें ज्यादातर विद्यार्थी, कार्यशील व कुछ घरेलू पढ़ी-लिखी वे महिलाएं है जो किसी न किसी रूप में इंटरनेट का इस्तेमाल करती है और 45.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों में इंटरनेट का इस्तेमाल नहीं पाया गया। निष्कर्षत: महिलाओं में इंटरनेट तकनीकी के उपयोग के बढ़ते चलन को सशक्त ग्रामीण महिला के भविष्य के रूप में देखा जा सकता है।

3. 'आपातकालीन सहायता लाइन नंबर' की जानकारी के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	आपातकालीन सहायता	हाँ	117	58.5
ब.	लाइन की जानकारी संबंधी	नहीं	83	41.5
	योग		200	100

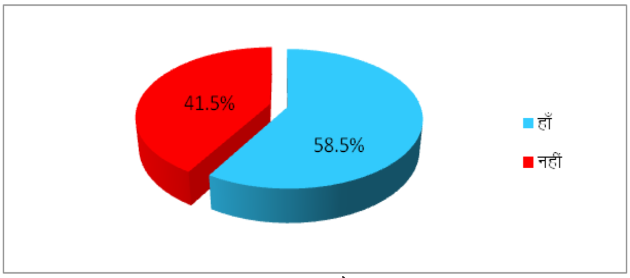

तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 58.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे रहे जो आपातकालीन सहायता लाइन की जानकारी रखते हुए पाये गये, जबकि 41.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे रहे जिन्हें इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी। निष्कर्षत: आईसीटी के फलस्वरूप आज ग्रामीण महिलाएं अपनी सुरक्षा को लेकर काफी सचेत होती नजर आ रही है।

4. 'न्यूज' देखने के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	न्यूज देखने संबंधी जानकारी	हाँ	169	84.5
ब.		नहीं	31	15.5
	योग		200	100

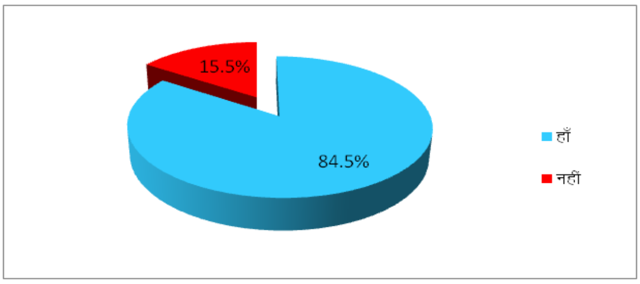

उपरोक्त सारणी में न्यूज देखने से संबंधित सवाल पर सर्वाधिक 84.5 प्रतिशत उत्तरदात्रीयों ने इसका जवाब हाँ में दिया, जो विभिन्न वर्गो से संबंधित रही। वहीं 15.5 प्रतिशत उत्तरदात्री इसका जवाब नहीं में देती हैं। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आईसीटी महिलाओं में जागरूकता व उत्सुकता पैदा करने में अपनी अहम् भूमिका निभा रही है जिसके चलते ग्रामीण महिलाएं अपने आस-पास ही नहीं बल्कि देश और दुनिया को लेकर काफी उत्सुक दिखाई पड़ती है व हर तरह की जानकारी से वाकिफ रहना चाहती है।

5. 'महिला दिवस' की जानकारी के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	महिला दिवस की जानकारी संबंधी	हाँ	79	39.5
ब.		नहीं	65	32.5
स.		अंदाजन	56	28
	योग		200	100

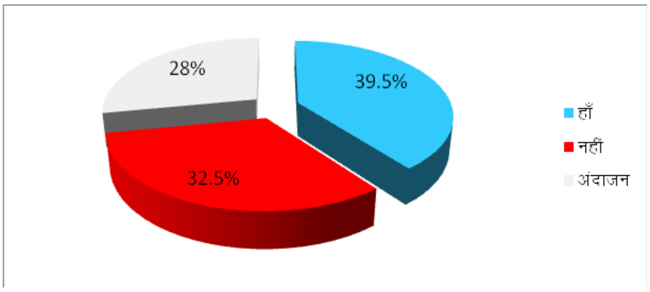

अध्ययन से संबंधी आंकड़े बताते है कि महिला दिवस की जानकारी रखने वाली महिलाओं में सर्वाधिक 39.5 प्रतिशत व 28 प्रतिशत वे महिलाएं है जिनको उपयुक्त (सटीक) तिथि की जानकारी नहीं थी, परन्तु अंदाजन जानकारी रखती हुई पायी गयी। वहीं 32.5 प्रतिशत का जवाब नहीं में रहा। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि अधिकांशत: महिलाओं में अपने अस्तित्व को लेकर काफी जागरूकता आ रही है।

6. 'उत्तरदाताओं के विज्ञान व तकनीकी' में विश्वास रखने के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	विज्ञान व तकनीकी में विश्वास संबंधी	हाँ	159	79.5
ब.		नहीं	41	20.5
	योग		200	100

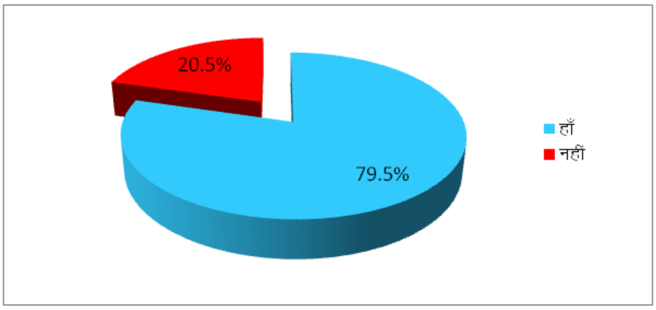

उपरोक्त सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 79.5 प्रतिशत उत्तरदाता विज्ञान व तकनीकी में विश्वास को लेकर पक्ष में पाये गये, जबकि 20.5 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे रहे जिनका किसी न किसी रूप में रवैया विपक्ष में रहा। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महिलाओं के तार्किक दृष्टिकोण में काफी बदलाव देखने को मिल रहा है और अधिकांशत: महिलाओं में यह जागरूकता पैदा हो रही है कि विज्ञान व तकनीकी ही हमारी समस्याओं के हल व सशक्त महिला निर्माण का सबसे कारगर उपाय है।

7. 'महिला व ग्रामीण विकास योजनाओं' की जानकारी के आधार पर वर्गीकरण –

क्र.सं.	समूह का नाम	श्रेणी नाम	उत्तरदायी	
			संख्या	प्रतिशत (:)
अ.	योजनाओं की	1-2	71	35.5
ब.	जानकारी संबंधी	2-अधिक	129	64.5
स.		नहीं	-	-
	योग		200	100

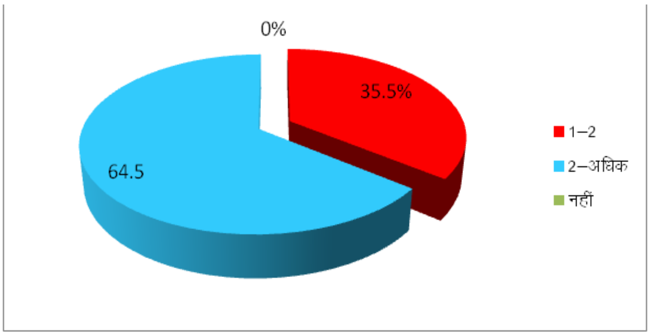

तालिका से स्पष्ट होता है कि 35.5 प्रतिशत चयनित उत्तरदात्री 1-2 महिला व ग्रामीण विकास संबंधी योजनाओं के बारे में जानती है, वहीं 64.5 प्रतिशत उत्तरदात्री ऐसी रही जो 2 से अधिक योजनाओं की जानकारी रखती है। कोई भी उत्तरदात्री ऐसी नहीं पायी गयी है कि जिन्हें एक भी योजना की जानकारी न हो। निष्कर्षत: महिलाएं अपने को लेकर काफी जागरूक है और अपने को सक्षम बनाने व सामाजिक, आर्थिक स्थिति के उन्नयन के लिए प्रयासरत है।

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रीयों से जीवनसाथी के चुनाव में प्राथमिकता तय करने से संबंधित प्रश्न के जवाब में सर्वाधिक 68.5 प्रतिशत व्यक्तिगत योग्यता व 21 प्रतिशत शिक्षा और 10.5 प्रतिशत ऐसी उत्तरदात्री रही जो अन्य स्थितियों को प्राथमिकता देते हुए पायी गयी। निष्कर्षत: महिलाओं में जीवनसाथी के चुनाव संबंधी निर्णयों को लेकर काफी सतर्कता देखने को मिल रही है।

इसी तरह से कुछ अन्य सवाल जैसे-दहेज की सहमति से संबंधित,जिसके पक्ष में 15.5 प्रतिशत व 84.5 प्रतिशत जवाब विपक्ष में रहे। निष्कर्षत: महिलाएं यह तय कर पाने में आज समर्थ है कि दहेज एक सामाजिक बुराई है व इसका अन्त होना चाहिए।

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से पूछे गये सवाल, पति को पत्नी की दैनिक कार्यों में सहायता व रक्तदान के पक्ष में काफी सकारात्मक विचार देखने को मिले। निष्कर्षत: महिलाएं आज आईसीटी के उपयोग के साथ-साथ सही-गलत में विभेद करने व स्त्री पुरूष की समानता के समर्थन में खड़ी दिखाई पड़ रही है, जो भविष्य में और भी सकारात्मक परिणाम की घोतक है।

अध्ययन में शामिल उत्तरदात्रियों से खुले प्रश्न के रूप में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के लाभ व हानि से संबंधी विचार जाने गये, जिसके प्रतिउत्तर शोधकर्ता को काफी सकारात्मक देखने को मिले। वहीं उत्तरदाता के मौजूदा प्राप्त ज्ञान के स्त्रोत से संबंधी सवाल के जवाब में टी.वी., रेडियो, मोबाइल, खबर-पत्रिकाओं, प्रचार-प्रसार माध्यमों का प्रतिशत ज्यादा देखने को मिला।

निष्कर्ष :

आज आईसीटी तक महिलाओं की पहुंच संभव होती दिखाई दे रही है, जिससे उनके ज्ञान के स्तर को बढ़ावा मिला है और आईसीटी न केवल महिलाओं के विकास व उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करती है बल्कि उन्हें और भी अधिक जागरुक, उत्साहित, आत्मविश्वासी, प्रबल करती हुए दिखाई देती है। आज वह अपने पक्ष को रखने में सहायक रही है। उन सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने में सक्षम हुई है जहां पुरूषों का वर्चस्व स्थापित रहा है। अंत में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी मुहैया कराने के सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं के अथक प्रयास व तकनीकी युग की सफलता का आंकलन ग्रामीण महिलाओं के स्वच्छन्द विचारों व व्यवहारिक क्रिया कलापों में देखने को मिलता है। इस तरह आईसीटी के माध्यम से भविष्य में इस दिशा में परिवर्तन की उम्मीद की जा सकती है। आईसीटी हस्तक्षेप के सहायक योगदान को वर्तमान महिला सशक्तीकरण के स्वर्णिम युग की पहल के रूप में देखा जा सकता है। इस स्वर्णिम युग में आने वाला कल और भी चार चांद लगा सकता है यदि इसमें और भी अधिक नवाचारों को प्रोत्साहित किया जाए व ग्रामीण महिलाओं तक इसे और भी अधिक सरलता व सुलभता से उपलब्ध कराया जाए।

अनुसंधानकर्ता का सामान्य अवलोकन :

अनुसंधानकर्ता को प्रस्तुत अध्ययन के अवलोकन के दौरान यह अनुभव हुआ कि आज भी कुछ ऐसे ज्वलंत सामाजिक

विषय है, जिनके सम्बंध में महिलाएं अनपेक्षित सामाजिक दबाव के चलते अपने विचारों को खुलकर रख पाने में स्वयं को असमर्थ महसूस कर रही है।

सन्दर्भ :

1. Lecture on : - "Information and Communication Technology in Education and Science Communication " By Mr. Nimish Kapoor 'Scientist', Vigyan Prasar-Consortium for Education Communication, New Delhi, India. Published on 25 Nov. 2014, CECUGC-youtube.
2. Dr. Manohar K. Sanap. "Role of Information and Communication Technology in the women Empowerment". Chronicle of the Neville wadia Institute of management studies & Research, ISSN : 2230-9667, Vol.IV- Issue 1, 24th-25th Feb. 2015 (Annual¼, P.-300.
3. मन्नालाल मीणा :-''सशक्तीकरण की मौन क्रांति'' योजना, जून 2012, ISSN:0971-8397, पृ.सं.-31
4. हीक्स, आर. (1999). ''इन्फोर्मेशन एण्ड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी : पॉवर्टी एण्ड डेवलपमेन्ट.'' डेवलपमेन्ट इन्फोर्मेटिक्स वर्किंग पेपर सीरीज न. 5/1999, मेनचेस्टर : इन्सटीटयुट फोर डेवलपमेन्ट पॉलिसी एण्ड मैनेजमेन्ट. रिट्राइवड 24 मई 2006, http://www.sed.manchester.ac.uk/idpm/publications/wp/di/di-wp05.htm
5. पिल्लई और शान्ता (2008). ''आईसीटी एण्ड एम्पावरमेंट प्रोमोशन अमंग पूअर वूमेन : हाव केन वी मेकइट हैप्पन ? सम रि''लेक्शनस ऑन केरलाज एक्सपीरियन्स'', वर्किंग पेपर - 398, सेन्टर फॉर डेवलमेंट स्टडीज। फ्रोम-http://www.sed.manchester.ac.uk/idpm/publications/wp/di/di-wp05.htm
6. मित्तर, एस. (2003). पार्ट प्प्प: ''ग्लोबलाईजेशन एण्ड आई.सी.टी. : इम्प्लॉयमेंट अपॉर्चुनिटीइज फोर वूमेन''. रिट्राइवड 21 जून 2007, फ्रोम-http://gab.wigsat.org/partIII.pdf

◆◆◆

> प्रकाशन शोध प्रक्रिया का अंतिम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की मूल्यवान उपलब्धि है। इसे समाज के बीच आना ही चाहिए जिससे समस्त मानवता लाभ उठा सके। प्रकाशन के सीमित अवसर शोध को संकुचित करते हैं।

(Continued from Page No. 21)

Ramanujan refers to the origin of above stated poem:

My poem, too, talks about some Indian attitudes to the Indian past, with which I was somewhat despondently preoccupied at the time. I had felt that Sanskrit itself and all that is represented had become an absence, at best a crippling and not an enabling presence, that the future needed a new past. Many things have changed since then and so have I. But the mood, the relation to what a God Murugan means, is a real one, and I hope it speaks not only for me.

(Ramanujan 140)

Ramanujan's poetry is a remarkable blend of emotion and reason, head and heart. He is a victim of cultural ambivalence and personal dilemma but he is an invaluable asset to Indian English poetry. Being a distinguished poet, his poetry comes largely on his family and relations, on his Indian association, mesmerizing lineage and sensibilities. Despite his death in 1993, he will always be recognized as a technical artist with perfect balance of tradition and modern. His observations for Indian life and culture are unparallel. His poetry has modern themes rooted in Indian cultural traditions. His continuity is that of T.S. Eliot's 'Tradition and Individual talent' which says that every new text added to a tradition will both alter and confirm that tradition.

Reference :

1. Dulai, Surjit S. 'First and only sight: The center and circles of A.K. Ramaujan's poetry',
2. Journal of South Asian Culture. 1989, Print.149-75.
3. King, Bruce. Modern Indian Poetry in English.
4. Melhotra, A.K. The Oxford India Anthology of Twelve Modern English Poets. New Delhi:
5. Oxford University Press, 1989.Print.
6. Mishra, Chittarajan. 'Image of family in the poetry of A.K. Ramanujan', Indian English
7. Literature. Volume iii. New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2002.Print.
8. Nayak, Bhagat. 'The Axis of the Hindu Consciousness in A.K. Ramanujan's Poetry', Indian
9. English Literature. Volume iv. New Delhi: Atlantic Publishers and Distributors, 2003.Print.
10. Pandey,Suryanath. Millennium Perspective on A.K. Ramanuajn. New Delhi: Atlantic
11. Publishers and Distributors (P)Ltd., 2001.Print.
12. Parthasarathy,R. 'Introduction', Ten Twentieth Century Poets. Delhi: Oxford University Press, Print.3.
13. Sharma, Arvind. Essays on the Mahabharata. Delhi: Oxford University Press, 1976.Print.

◆◆◆